

बार्ड, एस एस एम ०९७०-९३९३

राजभाषा भारती

राजभाषा विभाग
गृह मंत्रालय, भारत सरकार
नई दिल्ली

राजभाषा भारत

भारती जय विजय करे, कनक शस्त्र कमल धरे
-निराला

राजभाषा भारती

राजभाषा विभाग की त्रैमासिकी

कैलाशनाथ गुफा

16.8.93

प्रकाशन मंत्री

वर्ष : 15-16
संयुक्तांक : 60-61

पौष-1914/च्येष्ठ 1915 शाका
जनवरी-जून 1993

संपादक

राज कुमार सैनी
निदेशक (प्रमुखान)
फोन : 4617807

उपसंपादक

डॉ. गुदबयाल बजाज
फोन : 698054

संपादन सहायक
शांति कुमार स्याल

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। सरकार अथवा राजभाषा विभाग का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

निःशुल्क वितरण के लिए

पत्र-व्यवहार का पता :

संपादक, राजभाषा भारती,
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय,
लोकनायक भवन (11वां तल)
खान मार्किट, नई दिल्ली-110003

संपादकीय

पाठकों के पत्र

चिंतन

- मेरे प्रेरणास्रोत गांधी जी हैं !
(साक्षात्कार)
- संघ की राजभाषा हिन्दी और प्रशासन
- भाषा और व्याकरण
- हिन्दी के निर्माण में संस्कृत का योगदान
- अनुवाद के क्षेत्र और तकनीकी आधार
- शब्दावली बना अनुवाद की समस्याएं
- कोशीय अध्ययन में कंप्यूटर का उपयोग
- उपक्रमों में राजभाषा प्रबंध
- बैंकों के राष्ट्रीय स्वरूप की दृष्टि से राजभाषा हिन्दी का प्रयोग
- ग्राहक सेवा और हिन्दी

साहित्यिकी

- भारतीय बहुभाषिकता और हिन्दी
- मानवों के मेल-मिलाप और विश्वशांति में अनुवाद का योगदान

भारतीय भाषा संगम

उड़िया कवि डा० सीताकांत महापात्र
उर्दू कवि निदा फ़ाज़ली,
पंजाबी कवि डा० हरभजन सिंह और
बंगला कवि मल्लिकासेन गुप्त
की कविताओं के हिन्दी रूपान्तर

पुस्तक समीक्षा

पुरानी यादें : नए परिप्रेक्ष्य

जब हिन्दी में बोले सुभाष बाबू

	पृष्ठ
शंकर दयाल सिंह	1
निशिकान्त महाजन	4
मो. हफीजुर रहमान	13
उर्वी	15
डा. यज्ञव्रत	16
कोशल पाण्डेय	20
विजय कुमार मल्होत्रा	24
गोवर्धन ठाकुर	26
च०वा० मीरचंदानी	30
श्री द. बेन्ने	34
प्रो. सुन्दर जी. रेड्डी	37
डा. एन ई. विश्वनाथ अथर	39
	42
	46
वचनेश त्रिपाठी "साहित्येन्दु"	50

राजभाषा हिंदी के निर्माण में संस्कृत का योगदान

—उर्वी*

भाषाओं का प्रयोजन केवल शब्दों व शब्दायों का वहन करना नहीं होता, वे किसी संस्कृति की उत्तम ध्वजाएं भी होती हैं। जिस प्रकार से संस्कार मनुष्य के आभूषण होते हैं उसी प्रकार समाज का आभूषण है संस्कृति। संस्कारों से मनुष्य के जीवन का विकास होता है उसी प्रकार किसी देश अथवा जाति के जीवन का विकास उसकी संस्कृति पर निर्भर होता है। किसी देश अथवा जाति की संस्कृति को समझने के लिए सबसे बड़ा साधन है किसी देश अथवा जाति की भाषा को समझना। भाषा के माध्यम से हम देश की संस्कृति का अध्ययन सुगमता से कर सकते हैं और उसी भाषा के माध्यम से ही हम संस्कृति का विस्तार कर सकते हैं।

हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है अतः उसे उसके स्तर के योग्य सम्मान मिलना ही चाहिए। उसका स्तर मानक सार्वदेशिक एवं वैज्ञानिक रहे इसलिए मेधावी वर्ग ने हिंदी का आधार संस्कृत को ही बनाया क्योंकि संस्कृत संसार की अनेक भाषाओं की जननी होने के साथ पूर्ण वैज्ञानिक भाषा है। हिंदी और संस्कृत व्याकरण की परम्परा बहुत अंशों में मिलती जुलती है। कालांतर भेद से हिन्दी संस्कृत की ऐसी पुत्री है, जिसमें अपनी माता के गुण और संस्कार अधिक अंश में पाए जाते हैं। यदि हम संस्कृत के एक शब्द 'विधि' को समझ लेते हैं तो उसके विभिन्न रूप जैसे संविधान संविधायक संविधायिनी, संविधात्री, वैध और अवैध आदि का बनाना तथा समझना अति सरल हो जाता है। संस्कृत का यह गुण हिंदी की शब्दावली में बहुत सहायक है। इसलिए संविधान के 351वें अनुच्छेद में भी इसी बात को स्पष्ट करते हुए कहा गया है कि "हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली मुख्य रूप से संस्कृत से ही ग्रहण की जाएगी, परन्तु आवश्यकता पड़ने पर अन्य प्रांतीय भाषाओं की भी सहायता ली जा सकती है।"

आप किसी भी विदेशी भाषा से राष्ट्रभाषा हिंदी की तुलना करेंगे तो आप यह देखेंगे कि हिंदी के शब्द उस विदेशी भाषा से अपेक्षाकृत कम परिमाण वाले हैं यथा यास्वर इसमें तीर अक्षर हैं जबकि रोमन लिपि में यह Phosphorus इस प्रकार लिखा जाता है जोकि हिंदी या संस्कृत से बहुत बड़ा है। यह संस्कृत का ही प्रभाव है। संस्कृत हिंदी भाषा के लिए अनेक प्रकार से उपयोगी है। संस्कृत के द्वारा हिंदी अधिक उन्नति कर रही है। हिंदी की सबसे बड़ी विशेषता है इसकी पारिभाषिक शब्दावली। यह मुख्य रूप से संस्कृत से ही प्राप्त हुई है जिसका अभिप्राय है प्रत्येक मुख्य अर्थ के लिए एक पृथक् शब्द। संस्कृत शब्दावली संपूर्ण भारतीय भाषाओं में विद्यमान है, पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण सर्वत्र इस शब्दा-

वली के संबंध में समानता और एकरूपता रही है अतः भारत के प्रत्येक क्षेत्र में संस्कृत के शब्द अधिक समझे जाते हैं। भारत की राजभाषा हिंदी के लिए संस्कृत से प्राप्त यह गुण अत्यन्त आवश्यक एवं उपादेय है। प्रांतीय भाषाओं में जब विशिष्ट शब्दों का व्यवहार किया जाता है तब संस्कृत के शब्द-अनुपात की मात्रा—बंगला, उड़िया, असमिया में 90 प्रतिशत, हिंदी गुजराती, मराठी में 90 प्रतिशत, तमिल में 60 प्रतिशत तथा मलयालम, कन्नड़, तेलुगु में 90 प्रतिशत होती है। सामान्य बोलचाल में यह प्रतिशत निम्नलिखित रहता है:—

बंगला उड़िया असमिया—80 प्रतिशत, हिंदी, गुजराती 60 से 70 प्रतिशत, तमिल—50 प्रतिशत, मलयालम, कन्नड़ तेलुगु—50 प्रतिशत।

हिंदी के शब्द अर्थानुगामी हैं। ये हमारी शब्दावली का प्राण हैं। संस्कृत के शब्द मुख्य लक्षण अथवा विभेदक गुण के आधार पर बनाए जाते हैं। गणित रसायन तथा अन्य विज्ञानों में प्रतीकों और संक्षेपों की पदे-पदे आवश्यकता पड़ती है। इन्हीं से सूत्रों का निर्माण होता है। अतः हमारी भाषा में प्रत्येक तत्व के लिए प्रारम्भिक अक्षर विभिन्न रखा गया है। यहां भी संस्कृत का प्रभाव स्पष्ट प्रतीत होता है।

अंग्रेजी के असमस्त पदों का अनुवाद हिंदी के असमस्त पदों से ही किया गया है तथा Signal का अनुवाद है संकेत।

इसी प्रकार अंग्रेजी के उपसर्गों तथा प्रत्ययों का अनुवाद उपसर्गों तथा प्रत्ययों से ही किया गया यथा है Peri. के लिए परि, Perimeter परिमाप। इसी प्रकार से sub अनु, ab अप, anti प्रति, इत्यादि प्रत्ययों में Phosphate, ated, atic, in, ide इत्यादि प्रत्ययों का अनुवाद ईय, ईदित, ईयिक एम, इ है, जिनसे क्रमशः भास्वीय, भास्वीपित आस्वीयिक, भास्वेय शब्द बनेंगे। ये सभी उपसर्ग तथा प्रत्यय संस्कृत से ही प्राप्त हुए हैं।

अंग्रेजी के समस्त शब्दों का विश्लेषण करके सार्थक अंगों का अलग-अलग अनुवाद करके उनके सहयोग से हिंदी के शब्दों का निर्माण किया जाता है। उसमें भी संस्कृत का बहुत योगदान होता है।

यदि एक शब्द से अंग्रेजी में अनेक शब्दों की प्राप्ति होती है तो उन सब व्युत्पन्न शब्दों की व्यवस्था है। हिंदी में हम एक ही शब्द से अनेक शब्द प्राप्त कर सकते हैं। यह सब संस्कृत के प्रत्ययों का चमत्कार है।

*प्रवक्ता, लक्ष्मीबाई कालेज, दिल्ली—110007